**महामत कहे ए मोमिनों, देखो खसम प्यार।**
**ईसा महंमद अंदर आए के, खोल दिए सब द्वार।। ८२ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अपने धनी के प्यार को देखो कि रसूल मुहम्मद और श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी को मेरे अन्दर बिठाकर सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य खोल दिए।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ १००९ ॥

**अब तुम निकसो नींद से, आए पोहोंची सरत।**
**कौल किया था हक ने, सो आई कयामत।। १ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! श्री राजजी महाराज ने जो कयामत के समय आने का वायदा किया था वह समय आ गया है। अब तुम खेल से बाहर निकलो।

**जबराईल हक हुकमें, ल्याया नामें वसीयत।**
**फुरमान फकीरों सफकत, ले आवे दुनी बरकत।। २ ।।**

पारब्रह्म के हुकम से जबराईल फरिश्ता मक्का मदीना से वसीयतनामा लाए हैं जिनमें कुरान, पीरों की शफकत (कृपा) और दुनियां की बरकत मक्का से उठकर हिन्दुस्तान में आ गई है, का लेख है।

**द्वार तोबा के बंद होएसी, अग्यारैं सदी आखिर।**
**जो होवे अरवा अर्स की, सो नींद करे क्यों कर।। ३ ।।**

ग्यारहवीं सदी के अन्त में तोबा के दरवाजे बन्द हो जाएंगे (वाणी उतरनी बन्द हो जाएगी)। परमधाम की जो ब्रह्मसृष्टियां हैं वह अब कैसे सोती रहेंगी?

**आए लैल के खेल में, लेने अर्स लज्जत।**
**सुख सांचे झूठे दुख में, लेने को एह बखत।। ४ ।।**

रात्रि में खेल देखने के वास्ते आए थे ताकि परमधाम के सुखों की लज्जत मिल सके। परमधाम के सच्चे सुख को संसार के झूठे दुःख में बैठकर लेने का यह मौका है।

**अपन बैठे बीच अर्स के, अर्स को नाहीं सुमार।**
**दसों दिस मन दौड़ाइए, काहूं न आवे पार।। ५ ।।**

हम अखण्ड घर (परमधाम) में बैठे हैं। जो बेशुमार सुख देने वाला है। इसी दिशा से मन में विचार करके देखो तो उन सुखों की कोई सीमा नहीं है।

**खसमें ख्वाब देखाइया, बीच अर्स अपने इत।**
**हक हादी रूहें मिलाए के, उड़ाए दई गफलत।। ६ ।।**

श्री राजजी महाराज ने हमको घर में ही बिठाकर सपने का खेल दिखाया है और अब श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानी और रूहों को मिलाकर सब संशय दूर कर दिए हैं।

**ए खेल तो जरा है नहीं, सब है अर्स खसम।**
**बैठे इतहीं जागिए, उठो अर्स में तुम।। ७ ।।**

यह खेल तो कुछ नहीं है, मिटने वाला है। अखण्ड तो श्री राजजी महाराज का परमधाम ही है। जब यहां जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से जाग जाएंगे, तो तुम्हारे मूल तन परमधाम में उठ बैठेंगे।

Nijanand App

**अर्स बाग हौज जोए के, करो याद हक के सुख।**
**ज्यों पेड़ झूठे ख्वाब का, उड़ जाए सब दुख।। ८ ।।**

अखण्ड घर परमधाम के बाग, बगीचे, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी तथा अपने धनी श्री राजजी महाराज के सुखों को याद करो। जिससे इस सपने के झूठे संसार के सभी दुःख जड़ से समाप्त हो जाएं।

**असल आराम हिरदे मिने, अर्स को अखंड।**
**तब ए झूठे ख्वाब को, रहे न पिंड ब्रह्मांड।। ९ ।।**

और फिर अखण्ड घर परमधाम के सच्चे सुख हृदय में आ जाएं। ऐसा होने से इस झूठे सपने के झूठे तन तथा ब्रह्माण्ड दोनों समाप्त हो जाएंगे।

**कायम हक के अर्स में, बैठे अपने ठौर।**
**हक के इत वाहेदत में, कोई नाहीं काहूं और।। १० ।।**

और फिर हम देखेंगे कि हम अपने अखण्ड घर परमधाम में अपने ठिकाने मूल-मिलावा में ही बैठे हैं और श्री राजजी महाराज की एकदिली श्यामा महारानी और रूहों के सिवाय और कोई नहीं है।

**महामत कहे ए मोमिनो, इस्क लीजे हक।**
**असल अर्स के बीच में, हक का नाम आसिक।। ११ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मोमिनो! अपने धनी से सच्चा इश्क लो और अब यह जान लो कि अखण्ड परमधाम में पारब्रह्म ही आशिक है।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ १०२० ॥

किताब कुरान की, इनमें एते बाब हैं—खुलासा फुरमान का, गिरो दीन का, मेयराजनामे का, खुलासा इसलाम का, भिस्त सिफायत का बेवरा, हक की सूरत का, नाजी फिरके का, रूहों की बिने, नूर नूरतजल्ला, जहूरनामा, दोनामा, मीजान अर्स अजीम की महाकारन, मोमिन आए अर्स अजीम से, दोनामा के प्रकरण पांच किताब तमाम।

चौपाइयों तथा प्रकरणों का सम्पूर्ण संकलन

॥ प्रकरण ॥ ३६५ ॥ चौपाई ॥ ९४८२ ॥

॥ खुलासा सम्पूर्ण ॥

Nijanand App